(1)

Date 24.4.20

Psychology, D II (Hons)

Lecture No- 17

Dr. (Mrs) Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic — Personality Disorders (व्यक्तित्व विकृतियाँ)

व्यक्तित्व विकृति का तात्पर्य व्यक्ति के सामाजिक तथा व्यावसायिक व्यवहारों की गड़बड़ी है। व्यक्ति में कुछ ऐसे कुसमायोजी शीलगुण होते हैं जिनके कारण उसके सामाजिक व्यवहार तथा व्यावसायिक व्यवहार गड़बड़ हो जाते हैं।

Sarason and Sarason (2003) के शब्दों में :-

" Personality disorder refers to deeply ingrained, inflexible, maladaptive patterns of thought and behaviour which persist throughout the person's life."

व्यक्तित्व विकृति के प्रकार

(Types of Personality disorder)

व्यक्तित्व विकृति के कई प्रकार हैं, जिनमें मनोविकारी व्यक्तित्व (Psychopathic personality), स्थिर व्यामोही व्यक्तित्व (schizoid personality disorder), स्किजोटीपल व्यक्तित्व विकृति (schizotypal personality disorder), अवलम्बित व्यक्तित्व विकृति (dependent personality disorder) तथा परिहार व्यक्तित्व विकृति (avoidant personality disorder) मुख्य हैं। ~~हम प्रत्येक~~ हमें Paranoid personality disorder और Schizoid Personality disorder के बारे में जानना है।

Paranoia (स्थिर व्यामोह)

Paranoia बड़ा ही घातक मानसिक रोग है। Paranoia

का परिचय प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम इसके शाब्दिक अर्थ पर ध्यान देना आवश्यक है। Paranoia शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Paranous से हुई है, जो दो शब्दों Para + nous से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है गलत + मन अर्थात गलत मन। Cameron के अनुसार " इसप्रकार का रोगी चिन्ता और तनाव से बचाव हेतु अस्वीकरण और प्रक्षेपण करता है, फलतः इन रोगियों में व्यवस्थित व्यामोह के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।"

Kraepelin के अनुसार " व्यामोह वह मानसिक रोग है, जिसमें आन्तरिक कारणों से स्थायी और व्यवस्थित व्यामोह धीरे - धीरे विकसित होते हैं, परन्तु उसमें विभ्रम का अभाव रहता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं द्वारा स्पष्ट है कि Paranoia के रोगी का Delusion व्यवस्थित होता है अर्थात रोगी को विभ्रम तो होता है किन्तु रोगी का यथार्थ से सम्बन्ध विच्छेद नहीं होता। इसके अतिरिक्त इसके रोगियों में महानता और दण्डात्मक व्यामोहों की प्रधानता होती है तथा इनका व्यक्तित्व भी अधिक विघटित नहीं होता। इसीकारण इसके रोगी का इलाज घर पर ही करना सम्भव होता है। इनको अधिकतर अस्पताल में ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती

Types of Paranoia

Paranoia के मुख्य रूप से दो प्रकार माने जाते हैं:-

i) Paranoia और
ii) Paranoid state

इन दोनों के भी विभिन्न

स्पष्ट होते हैं। वे सभी प्रकार के व्यामोहों की विविधता के आधार पर प्रतिपादित किए गए हैं। वे इसप्रकार हैं:-

i) धार्मिक स्थिर व्यामोह (Religious paranoid):-

इसप्रकार का रोगी यह सोचता है कि वह ईश्वर का इकलौता पुत्र है या परमात्मा का अवतार है। ईश्वर ने इस धरती पर उसे अपना दूत बनाकर भेजा है। ऐसे रोगी अपने आपको अति महान समझते हैं।

ii) पीड़ात्मक स्थिर व्यामोह (Persecutory Paranoia):-

इसके रोगी के मन में यह विश्वास जम जाता है कि सारा विश्व उसका दुश्मन है तथा उसके पतन के लिए प्रयत्नशील है। इसके रोगी निर्दोष व्यक्तियों को भी अपना दुश्मन समझते हैं। इसप्रकार के व्यामोही कभी-कभी अपनी पत्नी और बच्चों की भी हत्या कर देते हैं।

iii) काम-वासनात्मक स्थिर व्यामोह (Erotic Paranoia):-

जिन रोगियों में यौन सम्बन्धी व्यामोह की अधिकता होती है उसे erotic Paranoia कहा जाता है। इसका रोगी यह सोचता है कि वह बहुत ही सुन्दर है और संसार की सर्वसुन्दरी उसपर मोहित हो गई है और उससे विवाह करना चाहती है। कभी-कभी रोगी उसके पास प्रेमपत्र भी लिखता है।

iv) विवादात्मक स्थिर व्यामोह (Litiguous Paranoia):-

इसप्रकार के रोगी का अधिक समय न्यायालय में बीतता है। इसके रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि वह किसी तरह की गलती नहीं करता है, परन्तु दूसरे लोग दुश्मनी के कारण उसका विरोध करते हैं। वह प्रतिरोध के लिए न्यायालय का

सहायता लेता है। यहाँ तक कि काल्पनिक शत्रु की हत्या के लिए षड्यंत्र रचता है। मुकदमा हार जाने के बाद वह पुनः अपील करता है। जो लोग उसकी मदद करते हैं उन्हें ही अपना शत्रु समझने लगता है। और उनपर मुकदमा भी कर देता है।

v) सुधारात्मक स्थिर-व्यामोह (Reformatory Paranoia):- इसप्रकार के रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि संसार का आर्थिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से पतन हो रहा है और वही स्वयं एक सच्चा तथा वास्तविक सुधारक है। इससे ग्रस्त व्यक्ति सदैव सुधारात्मक विचारों में खोया रहता है। सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक सुधारों में इनकी रुचि होती है। अतः सुधार से सम्बन्धित व्यामोह की अधिकता होती है।

vi) डाही स्थिर व्यामोह (Jealous paranoia):- इसप्रकार के रोगी के मुख्य लक्षण हैं ईर्ष्या का व्यामोह। इसप्रकार के paranoia में व्यक्ति विभिन्न प्रकार की ईर्ष्यायुक्त संभ्रान्तियों से घिरा रहता है। जैसे- पति अपनी पत्नी पर चरित्र-हीनता की शंका करता है तथा उससे ईर्ष्या किया करता है तथा पत्नी अपने पति के प्रति इसीप्रकार का व्यवहार करती है।

vii) रोगात्मक स्थिर व्यामोह (Hypochondriacal Paranoia):- इसप्रकार के रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जाता है। कभी वह सोचता है कि उसे कैंसर हो गया है या T.B. हो गया है जो व्यक्ति उसके रोग को झूठा बतलाते हैं वे उसके जानी दुश्मन हो जाते हैं।"

कुमारी कविता